रात्रि क्लास 12-8-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

दिन प्रति दिन बाबा बहुत सहज समझाते रहते हैं। वह पायन्ट्स नोट करना चाहिए। बाप दो है। हद का बाप हद का वरसा, बेहद का बाप बेहद का वरसा देते हैं। बेहद का सन्यास बेहद की बादशाही। कितना सहज बाबा सुनाते हैं। बाबा कहते हैं देहली में म्युजियम खुली है। एक खास ट्रेनिंग के लिए। कालिजों आदि में फालतू समय गंवाते हैं इससे तो यह सीखें। सुन्सीबुल बुधि होंगी तो 15 दिन में भी होशियार हो जावेंगी। ~~अंदर~~ आवेगी भी गरीब की बच्चियां। वह खर्चा आदि करने से छूट जावेंगे। साहुकारों के आते ही मुश्किल हैं। कालेजों से निकलती ही नहीं हैं। उन्हों को नौकरी आदि ही अच्छी लगती है। माताओं कन्याओं द्वारा नालेज से खुश भी बहुत होते हैं। बेहद के बाप से बेहद का वरसा लेना है। समझाना ही यह है। पारलौकिक बाप से वरसा कैसे मिल सकता है। आकर समझो। बाप का बनेंगे तो बेहद का वरसा पावेंगे। तो बच्चों को सर्विस ही करनी है। बाप के पास बैठ नहीं जाना है। 8-10 पायन्ट नोट कर गये। बस। फिर आपे ही और2 पायन्ट्स निकलते रहेंगे। दो बाप का समझाना बहुत सहज है। वह निराकार वह साकार। वह सभी का बाप है। तो सभी को वरसा जरूर देते हैं। आते हैं आकर स्वर्ग की रचना करते हैं। बाकी सभी शान्तिधाम में चले जाते हैं। बाप को जानने से, दैवी गुण धारण करने से यह पद पाते हैं। क्या समझना यह सहज नहीं है। तुम ने आलराउन्ड चक्र लगाया है। अभी फिर वापस जाते हो स्वीट होम। चपटी से तुम चले जाते हो। यह यात्रा तो बहुत ही अच्छी है। इससे ही पाप विनाश होते हैं परन्तु माया का आपोजीशन बहुत है। अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुड नाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

रही हुई पायन्ट्स :- यह बाप दादा भल दोनो ही इकट्ठे हैं। फिर भी यह स्टुडन्ट हैं। भल इकट्ठे बैठे हैं। तो भी कहते हैं इनको बहुत विघ्न आदि आवेंगे। नहीं तो इनको अनुभव कैसे हो जो औरों को समझा सके। इसलिए सभी कुछ अनुभव होता है। जितना महारथी तो माया भी उतना महारथी होकर लड़ती है। बाबा हमको खिलाते हैं इस खुशी में बैठता हूं फिर भी सेकण्ड में भूल जाता हूं। तो समझता हूं बच्चों को भी ऐसे होता होगा। इसलिए माया के तूफान का ख्याल न करना चाहिए। उड़ा देना चाहिए। याद की यात्रा का पुरुषार्थ तो करना ही है। सभी युद्ध के मैदान में हैं। नये2 से माया इतना युद्ध नहीं करती है। माया अपना मुरीद देखकर झट वार करती है। बाप कहते हैं तुम तो विश्व में शान्ति स्थापन करते हो तो तुमको भी शान्ति में रहना चाहिए। तुमको अशान्ति थोड़े ही करनी चाहिए। अशान्ति से गिर पड़ेंगे। औरों का भी नुकसान कर देंगे। फिर पद भ्रष्ट हो जावेगा। फिर सजा भी बहुत खानी पड़ेगी। पिछाड़ी में बहुत ही सा० होंगे। बाप से गुस्ताखी करते हैं तो सजा भी जरूर खावेंगे। इसलिए बाप खबरदार करते हैं। अच्छा।

बाप समझाते हैं सभी को वानप्रस्तअवस्था में जाना है। मरना जरूर है। 7-8 वर्ष में कैसे भी मरना है। प्राकृतिक आपदाएं भी आकर तुम्हारा खात्मा कर देंगी। इसलिए बाप कहते हैं अपना वरसा लो। वह है खुशी से मरना। हम जाते हैं अपने घर। खुशी से जाना चाहिए ना। इस शरीर का, इस दुनिया का ख्याल भी न रहे। इतनी हिम्मत चाहिए। घर तो बहुत ही खुशी से जाना चाहिए ना। जितना पवित्र बनेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। पुरुषार्थ तो बड़ा ही खुशी से करना है। बाप है ही शान्ति का सागर तो बच्चों को शान्त रहना चाहिए। शान्त नहीं रहते हैं गोया बाप का नाम बदनाम करते हैं। यह कायदा समझाया जाता है। बाहर में तो है ही अशान्ति। शान्ति कैसे ढूंढ़ते रहते हैं। जंगल में शान्ति मिलती है क्या। जैसे मनुष्य मरते हैं तो शान्ति हो जाती है। तुम मरने लिए चात्रक हो। जावें बाबा के पास। जीत जी मर जावें। शरीर छूट जाये हम शान्तिधाम चले जावेंगे। तुम्हारी है रियल शान्ति। भूतों को न छोड़ेंगे तो पद भ्रष्ट हो जावेगा। समाचार लिखना है बाबा को। में भूत आता है। तो बाप वाणी में समझावेंगे। कोई2 को तो कितना भी समझाओ तो भी भूत भागता ही ही नहीं है। अच्छा ओम।